

# हनुमानजी की आरती

मनोजवं मारुत तुल्यवेगंजितेन्द्रियं,  
बुद्धिमतांवरिष्ठम् ॥

वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं ,  
श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे ॥

आरती किजे हनुमान लला की ।  
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरवर काँपे ।  
रोग दोष जाके निकट ना झाँके ॥

अंजनी पुत्र महा बलदाई ।

संतन के प्रभु सदा सहाई ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाये ।

लंका जाये सिया सुधी लाये ॥

लंका सी कोट संमदर सी खाई ।

जात पवनसुत बार न लाई ॥

लंका जारि असुर संहारे ।

सियाराम जी के काज सँवारे ॥

लक्ष्मण मुर्छित पडे सकारे ।

आनि संजिवन प्राण उबारे ॥

पैठि पताल तोरि जम कारे।

अहिरावन की भुजा उखारे ॥

बायें भुजा असुर दल मारे ।

दाहीने भुजा सब संत जन उबारे ॥

सुर नर मुनि जन आरती उतारे ।

जै जै जै हनुमान उचारे ॥

कचन थाल कपूर लौ छाई ।

आरती करत अंजनी माई ॥

जो हनुमान जी की आरती गाये ।

बसहिं बैकुंठ परम पद पायै ॥

लंका विध्वंश किये रघुराई ।

तुलसीदास स्वामी किर्ती गाई ॥

आरती किजे हनुमान लला की ।

दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

